

कुशीनगर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का एक भौगोलिक अध्ययन

कर्मजीत कुमार¹, डॉ दुर्गेश मणि त्रिपाठी²

1- शोध छात्र, भूगोल विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

2- सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

सारांश

भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है जिस पर लगभग संपूर्ण संसाधनों का विकास हुआ है। कुशीनगर जनपद की भूमि का अधिकांश भूभाग समतल मैदानी एवं उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन है। यहां के लोगों की आर्थिक प्रगति सामान्यतः भूमि उपयोगिता एवं विकास पर निर्भर है लोगों द्वारा भूमि को अनुकूलतम उपयोग करके आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ एवं समृद्ध किया जा सकता है। भूमि उपयोग एवं उसका महत्व मानवीय आवश्यकताओं के अनुरूप बदलते रहते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र विगत दो दशकों 2011-12 एवं 2021-22 में भूमि उपयोग परिवर्तन तथा उसके प्रभाव विशेषतया भौतिक पर्यावरण सामाजिक आर्थिक व्यवस्था जैसी स्थानीय घटनाएं वन, कृषि योग्य बेकार भूमि, परती भूमि, शुद्ध वापित भूमि, ऊसर भूमि एवं कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के प्रतिरूप निरंतर प्रभावित हुए हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भूमि उपयोग के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर उसके समुचित उपयोग पर जोर दिया गया है। जिसके लिए प्रत्यक्ष अवलोकन एवं द्वितीयक स्रोतों से आंकड़ों को एकत्रित किया गया है जिससे नियोजित भूमि उपयोग द्वारा क्षेत्र का ग्रामीण व आर्थिक विकास संभव हो सके।

महत्वपूर्ण शब्दावलि- भूमि उपयोग, अनुकूलतम, शुद्ध वापित भूमि, आर्थिक प्रगति, प्राकृतिक संसाधन।

प्रस्तावना

भूमि उपयोग का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है किंतु प्राचीन काल में इसका महत्व सीमित था। प्रारंभ में भूमिका उपयोग वनस्पतियों झाड़ियों के रूप में अधिक था किंतु मानव के उत्पत्ति के बाद भूमि के उपयोग की महत्ता बढ़ने लगी। भूमि का प्रयोग मानव के विकास के आरंभिक चरण में खाद्य आपूर्ति एवं आवास के रूप में प्रयोग होना प्रारंभ हुआ। परंतु प्राचीन काल में सीमित मानव एवं सीमित आवश्यकता है भूमि उपयोग को अधिक प्रभावित नहीं कर सकी परंतु जैसे-जैसे मानव का विकास होता गया उसकी आवश्यकता है बढ़ती गई और भूमि उपयोग की महत्ता भी बढ़ती गई मानव की तीव्र विधि एवं उसकी आधारभूत आवश्यकताओं जैसे रहने के लिए आवासीय भूमि एवं भोजन की आपूर्ति के लिए कृषि भूमि

उपयोग के परिवर्तन में तीव्रता आई है। वर्तमान समय मानव के विकासीय प्रवृत्ति जैसे आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं प्रौद्योगिकी प्रवृत्ति के कारण भूमि उपयोग प्रतिरूप में तीव्रता से बदलाव देखा जा रहा है।

भूमि उपयोग तथा उसके अध्ययन की महत्ता एल.डी. स्टांप (1991) द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'The land of Britain, It's Use and Misuse' (ब्रिटेन की उपयोग प्रतिरूप के अध्ययन पर आधारित) के बाद अधिक बढ़ गई। जबकि भूमि और उसके अध्ययनों से संबंधित अध्ययन जे.पी. मार्श (1864), कार्ल सावर (1919) और जोन्स एवं फिंच (1925) जैसे विद्वानों ने पहले ही प्रारम्भ कर दिया था।

विश्व के संबंधी कार्यों का ध्यान प्रोफेसर बाल के बल्कि अध्यक्षता में अंतरराष्ट्रीय भौगोलिक संग 1949 के गठन के बाद प्रारंभ हुआ। 1964 में कोयाक द्वारा प्रकाशित कृषि मानचित्रावली ने भी भूमि उपयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय संदर्भ में भूमि उपयोग का सूत्रपात सर्वप्रथम एस.पी. चटर्जी (1945-52) द्वारा भूमि उपयोग सर्वेक्षण एवं शोध कार्य का सूत्रपात 24 परगना और हावड़ा जिले में किया गया। प्रो० बी०एल० प्रकाश राव द्वारा (1947-56) गोदावरी बेसिन के भूमि उपयोग का सर्वेक्षण किया गया। प्रो० एम० शफी ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के भूमि उपयोग का विश्लेषणात्मक रूप से अध्ययन कर शोध कार्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

प्रो० भाटिया (1970) के अनुसार "भूमि उपयोग का बदलता स्वरूप कोई नवीन घटना नहीं है वस्तुतः एक स्थानिक प्रक्रिया है जो समय स्थान के संदर्भ में सतत घटित होती रहती है। सामाजिक आर्थिक तकनीकी एवं संगठनात्मक कारकों के पारस्परिक क्रिया एवं निरंतर के परिणाम स्वरूप भूमि उपयोग का प्रतिरूप परिवर्तित होता रहता है"।

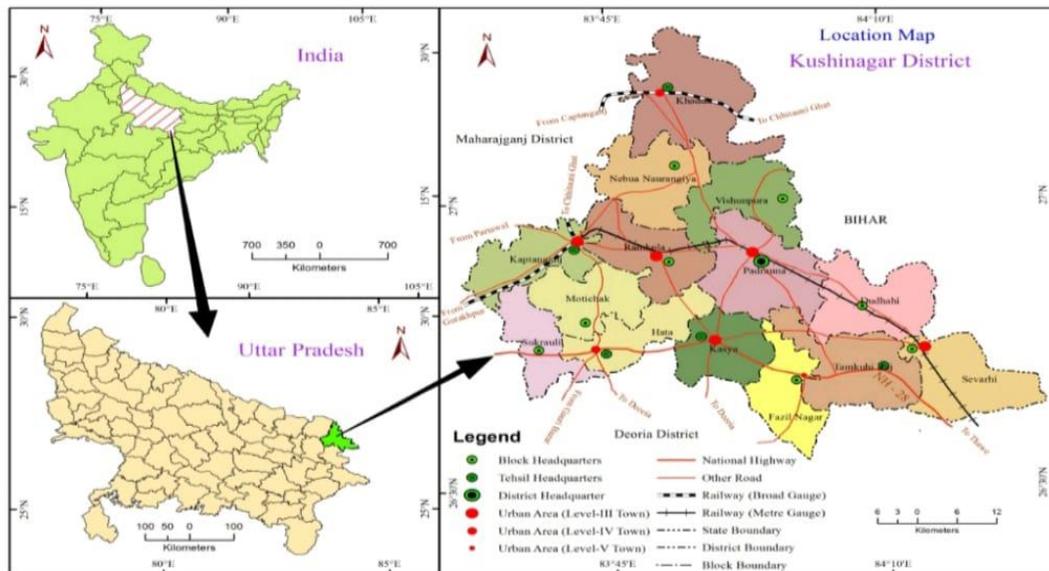
अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के पूर्वोत्तर में 26 डिग्री 34 मिनट उत्तर से 27 डिग्री 17 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 83 डिग्री 32 मिनट पूर्व से 84 डिग्री 15 मिनट पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है (चित्र 1.1)। यह उत्तर प्रदेश के पूर्वी सीमांत का एक जनपद है जिसकी सीमा बिहार राज्य से लगती है। कुशीनगर जनपद की पूर्वी सीमा बिहार राज्य से, दक्षिणी सीमा देवरिया जनपद से, दक्षिणी पश्चिमी सीमा गोरखपुर जनपद से एवं उत्तरी पश्चिमी सीमा महाराजगंज जनपद से लगती है। कुशीनगर जनपद की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है यहां का औसत वार्षिक तापमान 25.03 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है एवं अधिकतम औसत वार्षिक तापमान 31.01 डिग्री सेंटीग्रेड और न्यूनतम औसत वार्षिक तापमान 19.04 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है। मई माह सर्वाधिक शुष्क रहता है। अध्ययन क्षेत्र की वार्षिक औसत आद्रता 62.3 प्रतिशत है तथा औसत वार्षिक वर्षा 141 मिली मीटर रहती है। अधिकांश वर्षा जून से अक्टूबर माह के मध्य होती है। कुशीनगर जनपद गंडक वह घाघरा द्वारा में स्थित लगभग समतल उपजाऊ मैदान में होने के कारण जनसंख्या संकेंद्रण एवं कृषि के लिए अनुकूल दशाएं हैं। यहां पर जलोढ़ एवं मटियार दोमट मृदा पाई जाती है यहां की प्रमुख फसल चावल,

गेहूं, गन्ना, सरसों आदि है तथा फलोत्पादन एवं वन संपदा में प्रमुख रूप से आम, अमरूद, नीम, शीशम, साल, सागौन, पीपल, बरगद आदि पाए जाते हैं ।

कुशीनगर जनपद की कुल आबादी 2011 की जनगणना के अनुसार 3564970 है तथा क्षेत्रफल 2906 वर्ग किलोमीटर है जो उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.21 प्रतिशत भाग है। अध्ययन क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 23.10 प्रतिशत है तथा जनघनत्व 1227 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है तथा लिंगानुपात 960 है अध्ययन क्षेत्र का औसत कृषि घनत्व 154 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। अध्ययन क्षेत्र शासनिक दृष्टि से एक जनपद इकाई है जो गोरखपुर मंडल का भाग है इसके अंतर्गत 6 तहसीलें, 14 ब्लॉक, 141 नगर पंचायत एवं 1121 ग्राम पंचायतें हैं।

भौगोलिक पर्यावरणीय अनुकूलता एवं जनसंख्या दबाव के फल स्वरूप अध्ययन क्षेत्र के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 78.005 प्रतिशत भाग किस गति है तथा शेष 2.37 प्रतिशत भाग कृषि बंजर एवं 0.28 प्रतिशत भाग वन तथा 18.58 प्रतिशत अकृष्य भूमि के अंतर्गत है। कृषि भूमि के विस्तार लगभग अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है जिससे इसमें विस्तार की कोई संभावना नहीं दिखाई पड़ती है अतः कृषि गहनता एवं किसी विविधता द्वारा कृषि उत्पादकता में वृद्धि अभिवृद्धि अति श्रेयष्कर उपाय है। इसके अलावा तीव्र गति से बढ़ता नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण भूमि उपयोग के प्रतिरूप में तेजी से बदलाव हो रहा है।



चित्र 1.1

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप का कालिक एवं स्थानीय अध्ययन।
2. अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप के परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

आंकड़ा स्रोत एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आंकड़ों के संग्रह का स्रोत द्वितीय आंकड़ा तथा अवलोकन है। द्वितीयक आंकड़ों को मुख्य रूप से जिला सांख्यिकी पत्रिका एवं जिला जनगणना हैंडबुक 2011 से प्राप्त किया गया है। यह शोध पत्र व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। आंकड़ों का विश्लेषण सारणीयन,सांख्यिकी एवं मानचित्रण विधि द्वारा किया गया है।

कुशीनगर जनपद में विकास खंडवार भूमि उपयोग हेक्टेयर में 2020-21							
क्र. सं.	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि
1.	कसानगंज	17491	45	99	376	382	62
2.	रामकोला	22837	31	118	374	349	437
3.	मोतीचक	18570	40	122	351	312	68
4.	सुकरौली	14762	23	57	469	555	71
5.	हाटा	17088	41	150	449	310	85
6.	खड्डा	31631	122	268	558	315	1431
7.	नेबुआ नौगरिया	20601	53	182	527	312	95
8.	विशुनपुरा	21869	92	188	499	278	56
9.	पडरौना	27494	164	264	696	340	161
10.	कसया	11918	19	76	319	232	26
11.	दुदही	21313	51	128	431	325	59
12.	फाजिलनगर	17091	47	225	469	385	61
13.	तमकुही	20169	36	118	270	427	55

14.	सेवरही	15509	53	223	539	821	72
15.	योग ग्रामीण	288343	817	2218	6347	5343	2739
16.	योग नगरीय	3126	0	62	332	254	41
17.	योग जनपद	291469	817	2280	6679	5597	2780

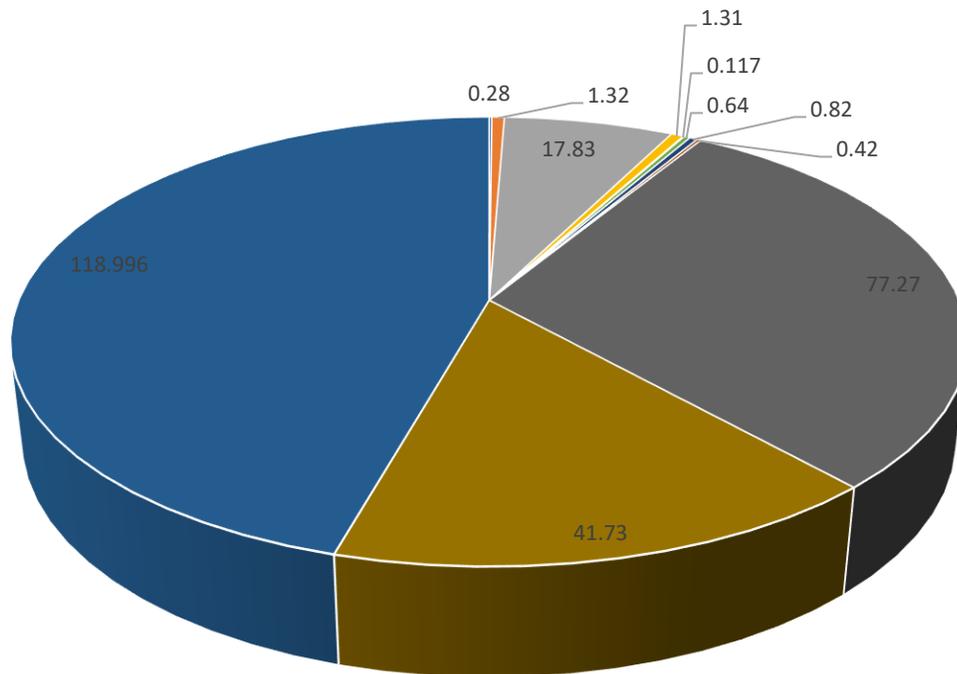
क्र. सं.	विकासखण्ड	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	सकल बोया गया क्षेत्रफल
1.	कसानगंज	3118	23	297	13089	10104	23193
2.	रामकोला	5004	26	402	16096	7501	23597
3.	मोतीचक	3901	22	193	13561	9713	23274
4.	सुकरौली	1771	25	235	11556	12315	23871
5.	हाटा	2376	23	237	13417	10175	23595
6.	खड्डा	11531	20	276	17110	9328	26438
7.	नेबुआ नौगरिया	3270	21	368	15773	9375	25148
8.	विशुनपुरा	3461	32	341	16922	8397	25319
9.	पडरौना	4746	42	263	20818	14893	35711
10.	कसया	1401	13	70	9762	6019	15781
11.	दुदही	3493	27	329	16470	9499	25969
12.	फाजिलनगर	2566	35	341	12962	12096	25058
13.	तमकुही	3193	23	447	15600	11101	26701
14.	सेवरही	4519	20	505	18737	8168	26905
15.	योग ग्रामीण	54350	352	4304	211873	138687	350560

16.	योग नगरीय	1550	2	31	854	318	1172
17.	योग जनपद	55900	354	4335	212727	139005	351732

कुशीनगर जनपद में तुलनात्मक भूमि उपयोग प्रतिरूप (हेक्टेयरमें)- 2010-11 & 2020-21				
क्र. सं.	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल 2010-11	क्षेत्रफल 2020-21	बदलाव % (वृद्धि & कमी)
1.	वन	817 (0.28)	817 (0.28)	0
2.	शुद्ध कृषि के लिए उपलब्ध भूमि			
(अ)	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	3854 (1.32)	2780 (0.95)	-1074 (-27.87)
(ब)	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	51958 (17.83)	55900 (19.18)	3942 (7.59)
(स)	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि	3826 (1.31)	4335 (1.49)	509 (13.30)
3.	अन्य कृषि भूमि			
(अ)	चारागाह भूमि	342 (0.117)	354 (0.121)	12 (3.51)
(ब)	कृष्य बेकार भूमि	1866 (0.64)	2280 (0.78)	414 (22.19)
4.	परती भूमि			
(अ)	वर्तमान परती	2380 (0.82)	6679 (2.29)	4299 (180.63)
(ब)	अन्य परती	1221 (0.42)	5597 (1.92)	4376 (358.39)
5.	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	225205 (77.27)	212727 (72.98)	-12478 (-5.41)

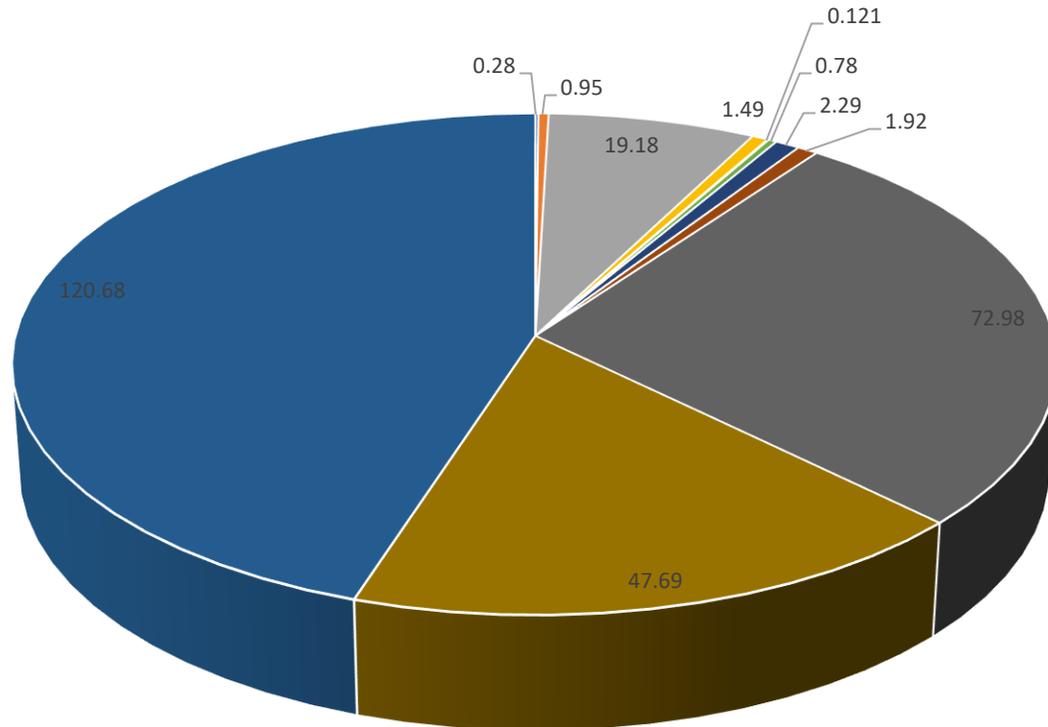
6.	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	1216333 (41.73)	139005 (47.69)	17372 (14.28)
7.	सकल बोया गया क्षेत्र	346838 (118.996)	351732 (120.68)	4894 (1.41)
8.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	291469	291469	0

क्षेत्रफल 2010-11



- वन
- कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
- चारागाह भूमि
- वर्तमान परती
- शुद्ध बोया गया क्षेत्र
- सकल बोया गया क्षेत्र
- ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि
- उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि
- कृष्य बेकार भूमि
- अन्य परती
- एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र

क्षेत्रफल 2020-21



- वन
- कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
- चारागाह भूमि
- वर्तमान परती
- शुद्ध बोया गया क्षेत्र
- सकल बोया गया क्षेत्र
- ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि
- उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि
- कृष्य बेकार भूमि
- अन्य परती
- एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र

किसी भी क्षेत्र की आर्थिक विकास एवं पर्यावरणीय दशाओं में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जिससे मुख्यतः ईंधन हेतु लकड़ी, इमारती एवं बहुमूल्य लड़कियां, औषधीय एवं खाद्य सामग्री के उत्पाद आदि प्राप्त होती है इसके अलावा पर्यावरण अनुकूलन, मृदा संरक्षण, भूमि जल संरक्षण एवं वायु शुद्धिकरण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार मैदानी भागों में लगभग 20% क्षेत्र पर वनों की उपस्थिति आवश्यक मानी गई है।

कुशीनगर जनपद में उपस्थित वन राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप न होकर अति निम्न स्तर का है। जनपद में 2020-21 में 817 हेक्टेयर भूभाग पर वन आच्छादित है जो कुल प्रतिवेदित भूमि का मात्र 0.28 प्रतिशत है। जिसका सर्वाधिक क्षेत्र पडरौना विकासखंड में (164 हेक्टेयर) तथा न्यूनतम क्षेत्र सुकरौली विकासखंड में (23 हेक्टेयर) है।

ऊसर भूमि के अंतर्गत ऐसी भूमि को शामिल किया जाता है जिसकी ऊपरी सतह में लवणीय एवं क्षारीय तत्व नमी के साथ सफेद परत के रूप में फैले रहते हैं। जिसे मृदा में सामान्यतः फसल उगाने की क्षमता नष्ट हो जाती है। जनपद में वर्ष 2010-11 में कुल ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि 3854 हेक्टेयर (1.82 प्रतिशत) थी जो 2020-21 में घटकर 2780 हेक्टेयर (0.95 प्रतिशत) हो गई है, जिसमें लगभग 27.87 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। सर्वाधिक ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि खड्डा (1431 हेक्टेयर) विकासखंड में है तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया (26 हेक्टेयर) विकासखंड के अंतर्गत है। जनपद में ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि में गिरावट आई है जिसका प्रमुख कारण उत्तर प्रदेश भूमि सुधार निगम (विश्व बैंक की भूमि सुधार परियोजना) द्वारा सुधार प्रक्रिया एवं जन जागरूकता का निरंतर प्रयास रहा है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के अंतर्गत आधिवासों (ग्रामीण एवं नगरीय) और अवसंरचनात्मक विकास (सड़क, रेल, नहर एवं अन्य) उद्योगों आदि कार्यों में उपयोग की जाने वाली भूमि को शामिल किया जाता है। इस प्रकार की भूमि मुख्यतः द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं में उपयोग की जाती है। जनपद में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 2010-11 में 51958 हेक्टेयर थी, जो 2020-21 में बढ़कर 55900 हेक्टेयर हो गयी है। अतः इसमें 7.59 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इसके अंतर्गत जनपद की कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का सर्वाधिक क्षेत्र खड्डा विकासखंड में (11531 हेक्टेयर) तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड में (1401 हेक्टेयर) है। इस प्रकार की भूमि के क्षेत्र में वृद्धि का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि तथा अवसंरचनात्मक विकास है।

उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों में ऐसी भूमि को शामिल किया जाता है जिसमें उद्यान, फलदार वृक्ष, औषधीय गुणों वाले पादप आदि को शामिल किया जाता है। ऐसी भूमि सामान्यतः निजी स्वामित्व के अंतर्गत आती है। इस प्रकार की भूमि के अनुप्रयोग से क्षेत्र के लोगों को कृषि के अतिरिक्त आय के स्रोत में सहायक होती है। कुशीनगर जनपद में इस प्रकार की भूमि वर्ष 2010-11 में 3826 हेक्टेयर (1.31 प्रतिशत) थी जो 2020-21 में बढ़कर 4335 हेक्टेयर (1.49 प्रतिशत) हो गयी है। जिसमें वृद्धि 13.30 प्रतिशत की हुई है। इस प्रकार की भूमि में वृद्धि का कारण लोगों की जागरूकता में वृद्धि, शैक्षिक स्तर में सुधार, यंत्रीकरण का प्रयोग, आदि है जनपद में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्र सेवरही विकासखंड में (505 हेक्टेयर) तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड में (70 हेक्टेयर) पाया जाता है।

चारागाह भूमि पर अधिकांशतः ग्राम पंचायत या सरकार का स्वामित्व होता है। ग्राम पंचायत वाली भूमि को साझा संपत्ति संसाधन माना जाता है। इस प्रकार की भूमि ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चारण के काम आती है, जबकि पिछले दशक से इस प्रकार की भूमि का उपयोग भूमिगत जल में वृद्धि एवं जल संरक्षण हेतु सरकार द्वारा जलाशय, तालाब एवं अन्य कार्यों में लाई जा रही है। जनपद में वर्ष 2010-11 में कुल चारागाह भूमि में 342 हेक्टेयर थी जो बढ़कर 2020-21 में 354 हेक्टेयर हो गई है जिसमें लगभग 3.51% की वृद्धि दर्ज की गई है कुशीनगर जनपद में चारागाह भूमि का सर्वाधिक क्षेत्र पडरौना विकासखंड (42 हेक्टेयर) में तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड (13 हेक्टेयर) में है।

कृषि बेकार भूमि वह भूमि है जो पिछले 5 (पांच) वर्षों या उससे अधिक समय तक परती या अकृषित है तथा किन्हीं कारणों से ऐसी भूमि को कृषि कार्य हेतु उपयोग में नहीं लाया जा रहा है। कृषि योग्य बेकार भूमि से आशय उस भूमि से हैं जो कृषि हेतु प्राप्त नहीं है किंतु इसे अल्प लागत द्वारा कृषि भूमि में परिवर्तन किया जा सकता है। आधुनिक कृषि क्षेत्र में विकसित तकनीकों, यंत्रों तथा उन्नतशील बीजों, रासायनिक उर्वरकों, सिंचाई व्यवस्था ने सुधार करके ऐसी कृषि योग्य बेकार भूमि को कृषि हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। वर्ष 2010-11 में इस वर्ग की कुल भूमि 1866 हेक्टेयर (0.64 प्रतिशत) थी जो 2020-21 में बढ़कर 2280 हेक्टेयर (0.78 प्रतिशत) हो गई है। जिसमें वृद्धि लगभग 22.11% की हुई है। कृषि बेकार भूमि का सर्वाधिक भाग खड्डा विकासखंड (268 हेक्टेयर) में तथा न्यूनतम भाग सुकरौली विकासखंड (57 हेक्टेयर) के अंतर्गत विस्तारित है। कुशीनगर जनपद में कृषि बेकार भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण मृदा अपरदन, अनुपजाऊपन भूमि, मृदा लवणीकरण, जल जमाव आदि हैं।

वर्तमान परती भूमि ऐसी भूमि होती है जो 2 वर्ष या उससे कम समय तक कृषि रहित रही हो। ऐसी भूमि में पहले कृषि की जाती थी परंतु वर्तमान में एक दो वर्ष से कृषि कार्य नहीं किया जा रहा है। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि लगातार कृषि करने से उसे भूमि की उर्वरा शक्ति में गिरावट हो जाती है। अतः उर्वरा शक्ति को अनुकूल बनाए रखने के लिए भूमि को कुछ समय के लिए परती छोड़ दिया जाता है। परिणाम स्वरूप कुछ समय अंतराल बाद कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति का पुनर्भरण हो जाता है जो कृषि कार्य हेतु अच्छा माना जाता है (प्रसाद, 1989)। भारत के भूमि लेख नियमावली (2007) के पैरा 108 के अनुसार वर्तमान प्रति भूमि को कृषि योग्य भूमि के अंतर्गत रखा गया है। यह भूमि की प्राकृतिक गुणवत्ता बनाए रखने की परंपरागत विधि है जो वर्तमान समय तक प्रभावी है।

कुशीनगर जनपद में वर्ष 2010-11 में वर्तमान परती भूमि के अंतर्गत 2380 हेक्टेयर (0.82 प्रतिशत) थी जो 2020-21 में बढ़कर 6679 हेक्टेयर (2.29 प्रतिशत) हो गई है। जिसमें वृद्धि लगभग 180.63 प्रतिशत की हुई है। वर्तमान प्रति भूमि का सर्वाधिक भाग पडरौना विकासखंड में 696 हेक्टेयर है जबकि न्यूनतम क्षेत्र तमकुही विकासखंड में 270 हेक्टेयर है। वर्तमान परती भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण कृषि उत्पादकता में गिरावट है इसके अलावा जलवायु परिवर्तन, रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग, मृदा क्षरण, अत्यधिक सिंचाई, चक्रीय फसल प्रतिरूप को नजर अंदाज करना आदि कारण है।

अन्य परती भूमि के अंतर्गत ऐसी किसी योग्य भूमि को शामिल करते हैं जिसमें 2 वर्ष से अधिक और 5 वर्ष से कम समय तक कृषि रहित रही हो। कुशीनगर जनपद में वर्ष 2010-11 में 1221 हेक्टेयर (0.42 प्रतिशत) थी जो बढ़कर 2020-21 में 5597 हेक्टेयर (1.92 प्रतिशत) हो गई है। जिसमें वृद्धि लगभग 358.39 प्रतिशत की हुई है। अन्य परती भूमि का सर्वाधिक क्षेत्र सेवरही विकासखंड (821 हेक्टेयर) में तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड में (332 हेक्टेयर) पाया जाता है। जनपद में अन्य परती भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण मानसून में अनियमितता, उर्वरा शक्ति में लगातार गिरावट, भू जोत का आकार विखंडन, अति सिंचाई, चक्रीय फसल प्रतिरूप को नजर अंदाज करना, जल जमाव आदि है जिससे जनपद में अन्य परती भूमि के क्षेत्र में लगातार वृद्धि हो रही है।

शुद्ध वापित क्षेत्र के अंतर्गत “कुल प्रतिवेदित भूमि में से कृषि कार्य हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली भूमि को शुद्ध वापित भूमि कहते हैं” (स्टांप 1948)। “शुद्ध बोया गया क्षेत्र के उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं मानव के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के स्तर का द्योतक होता है” (मेयर

1992)। कृषि प्रत्यक्ष रूप से समतल धरातल, उपजाऊ मृदा तथा अनुकूल जलवायुविक आदि प्राकृतिक दशाओं की अनुकूलता या प्रतिकूलता से प्रभावित होती है। कृषि कार्य से संबंधित विभिन्न कृषि यांत्रिकी तकनीकों (उन्नतशील बीजों, रासायनिक उर्वरकों, यंत्रिकरण आदि) का विकास कर कृषि भूमि के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा, क्योंकि कृषि उत्पादकता इन्हीं कारकों पर निर्भर करती है। कुशीनगर जनपद में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं उनके जीविकोपार्जन हेतु कृषि भूमि को अधिकाधिक शामिल किया गया है। कुशीनगर जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्र वर्ष 2010-11 में 25205 हेक्टेयर (77.27 प्रतिशत) था जो कम होकर वर्ष 2020-21 में 212727 हेक्टेयर (72.98 प्रतिशत) हो गया है जिसमें लगभग 5.41 प्रतिशत (12478 हेक्टेयर) की कमी हुई है। जनपद में सर्वाधिक बोया गया क्षेत्र पडरौना विकासखंड में (20818 हेक्टेयर) है जबकि न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड में (9762 हेक्टेयर) है।

जनपद में जनसंख्या वृद्धि का प्रत्यक्ष रूप से भूमि पर प्रभाव पड़ता है जिसके कारण विगत दशक में कुल शुद्ध वापित भूमि में 5.41 प्रतिशत की कमी हुई है। जिसका प्रमुख कारण जलवायुविक विषमता, मानसून अनियमितता, जोत के आकार का लगातार छोटा होना, स्थानिक पलायन आदि प्रमुख प्रतिकूल कारण रहे हैं।

जबकि एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र तथा सकल बोया गया क्षेत्र में 2010-11 की तुलना में 2020-21 में क्रमशः 14.28 प्रतिशत तथा 1.41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। कुशीनगर जनपद में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र का तथा सकल बोए गए क्षेत्र का सर्वाधिक भाग पडरौना विकासखंड में तथा न्यूनतम क्षेत्र कसया विकासखंड में है।

निष्कर्ष

कुशीनगर जनपद का वर्तमान अध्ययन विगत दशक 2010-11 एवं 2020-21 के मध्य विकास खंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग के बदलाव जनसंख्या दबाव एवं अवसंरचनात्मक विकास के संदर्भ में परिलक्षित हुए हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र के लोगों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति, मानसूनी वर्षा का प्रभाव, अनेक सहकारी नीतियां आदि का भूमि उपयोग के परिवर्तन पर महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के कारण शुद्ध वापित क्षेत्र में 5.41 प्रतिशत की कमी तथा परती भूमि, कृषि योग्य भूमि में वृद्धि दर्ज की गई है। क्षेत्र में भूमि सुधार संबंधी नीतियों की क्रियान्वयन से ऊसर भूमि में कमी तथा कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि उपयोग में वृद्धि हुई है।

अतः क्षेत्र में बढ़ते जनसंख्या दबाव एवं बढ़ती खाद्य आपूर्ति की मांग और अवसंरचनात्मक विकास की चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्र में उपलब्ध भूमि उपयोग प्रतिरूप का अनुकूलतम तथा वैज्ञानिक विधि से उपयोग करना पड़ेगा। जनसंख्या दबाव एवं खाद्य पूर्ति की समस्या से निपटने के लिए कृषि योग्य जो बेकार भूमि है उसमें कृषि यांत्रिकी तकनीकों (उन्नतशील बीजों, यंत्रीकरण, रासायनिक तथा जैविक उर्वरकों का सही अनुपात में प्रयोग, फसल विविधिकरण, फसल चक्रण, आदि) का प्रयोग करना। इसके अलावा कृषि का व्यवसायीकरण, कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना, कृषि खाद्यान्न के भंडारण की अच्छी व्यवस्था करना आदि द्वारा अध्ययन क्षेत्र के जन समूह की आर्थिक-सामाजिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है। इसी प्रकार अवसंरचनात्मक विकास से होने वाले पर्यावरण अवनयन से निपटने के लिए वनारोपण कराना, जलाशय खुदवाना, सड़कों के किनारे वृक्षारोपण कराना आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ali Mohammed (1978), 'Studies in Agricultural Geography, Rajesh Publications, New Delhi, 1978, pp-1-6
2. Bhatia, S.S. (1965): Patterns of Crop Combination and Diversification India; Economic Geography, Vol. 41, pp. 39-56.
3. Bhat, M.M. & Shah, A.R. (2011) Agricultural Land Use and Cropping Pattern in Jammu and Kashmir, Research Journal of Agricultural Sciences, 2(3): 710-712.
4. Chandel, R.S. (1991): Agriculture Change in Bundelkhand Region, Star Distributors Publication Division, Varanasi.
5. Chatterjee (1952), 'Land utilization survey of Howrah Districts Geographical Review of India. Vol.14, No, 13.
6. D. Chakraborty, K.H Kamal and other. (2013), Research Paper, Land use and Agri-Production: A case study in Western Uttar Pradesh , Recent Reseach in Science and technology, Vol.2(9), PP11-17.
7. Dr. Tonape, L.B. Barakade, A.J. & Dr. Lokhande, T. N. (2011) Agricultural Land use Pattern in Satara District of Maharashtra, Research Analysis and Evaluation, 1(17): 12-15.
8. Das, M.M. (1981) Land Use Pattern in Assam, Geographical Review of India, 43(3): 43-44.
Gomatee (2012) Agricultural Land-Use Pattern in Bulandshahar District of Upper-Ganga Yamuna Doab, India, International Journal of Social Science Tomorrow, 1(3): 40-45.
9. Hussein, Majid (1996) Systematic Agricultural Geography, Tata Mc Graw-Hill Publication : 256-264.
10. Kushwaha, Niru (2008) Agriculture in India: Land Use and Sustainability, Indian Journal of Rural Studies, 15(1): 1-10.
11. Mankar, G.S. (2008) Agricultural Landuse Pattern in Mulshi Tahsil, Pune District, The Deccan Geographer, 46(1).

12. Mishra B. N. (ed) (1990), 'Land utilization and management in India', Chugh.
13. Shafi, M. (1972): Measurement of Agricultural Productivity of the Great Indian Plain; *The Geographer*, Vol. 19, No. 1, pp. 4-13.
14. Singh.R.P and Islam Zubair (2010). Research Paper, Land use planning in western Uttar Pradesh: Issue and challenges, *Journal of Environment and Nanotechnology*, Vol.2, PP, 70-73.
15. कुशवाहा, लालजी एवं शर्मा वी.एन. (2014), देवरिया में भूमि उपयोग परिवर्तन, एक भौगोलिक विश्लेषण, राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, अंक 01, पृष्ठ सं. 77-901
16. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी. (1994): कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 35.
17. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी. (2009) भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
18. पाण्डेय, जे.एन. (2008), कृषि भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 83-90.
19. वारलो, आर एण्ड जॉनसन, बी.डब्ल्यू, (1954): लैण्ड प्रोबलम एण्ड पॉलिसिज, मैक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, आई.एन.सी., न्यूयार्क, पृ. 99.
20. सिंह विजय, सिंह चन्द्र प्रकश, (2011). "मडिहार विकासखण्ड (मीरजापुर) में भूमि उपयोग क्षमता में स्थानिक-कालिक परिवर्तन एक भौगोलिक अध्ययन", दिसम्बर 2011, अंक 2. पाठ 93118
21. खत्री, हरीश कुमार, (2020), 'कृषि भूगोल', कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
22. चान्दना, आर.सी. (2012). "जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
23. हुसैन, मजिद, (2014) " कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली
24. कुरुक्षेत्र एवं योजना', मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
25. जनगणना रिपोर्ट, 2011, भारत सरकार
26. जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद कुशीनगर
27. www.rural.nic.in
28. www.kushinagar.nic.in